ऐतरेय ब्राह्मणकी एक सदाचार-कथा

(डॉ० श्रीइन्द्रदेवसिंहजी आर्य, एम्०ए०, एल्-एल्० बी०, साहित्यरत्न, आर० एम्०पी०)

ब्राह्मणग्रन्थोंमें सदाचारके अनेक प्रेरणा-स्रोत हैं, ऐतरेयब्राह्मणका हरिश्चन्द्रोपाख्यान वैदिक साहित्यका अमूल्य रत्न है। इसमें इन्द्रने रोहितको जो शिक्षा दी है, उसका टेक (Refrain) है—'**चरैवेति**', '**चरैवेति**'—चलते रहो, बढ़ते रहो। इस उपाख्यानके अनुसार सैकड़ों स्त्रियोंके रहते हुए भी राजा हरिश्चन्द्रके कोई संतान न थी। उन्होंने पर्वत और नारद—इन दो ऋषियोंसे इसका उपाय पूछा। देवर्षि नारदने उन्हें वरुणदेवकी आराधना करनेकी सलाह दी। राजाने वरुणकी आराधना की और पुत्र-प्राप्तिपर उससे उनके यजनकी भी प्रतिज्ञा की। इससे उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ और उसका नाम रोहित रखा। कुछ दिन बाद जब वरुणने हरिश्चन्द्रको अपनी प्रतिज्ञाका स्मरण कराया तो उन्होंने उत्तर दिया—'जबतक शिशुके दाँत नहीं उत्पन्न होते, वह शिशु अमेध्य रहता है, अतः दाँत निकलनेपर यज्ञ करना उचित होगा' (ऐतरेय० ७। ३३। १-२)

वरुणने बच्चेके दाँत निकलनेपर जब उन्हें पुनः स्मरण दिलाया, तब हरिश्चन्द्रने कहा—'अभी तो इसके दूधके ही दाँत निकले हैं, यह अभी निरा बच्चा ही है। दूधके दाँत गिरकर नये दाँत आ जाने दीजिये, तब यज्ञ करूँगा।' फिर दाँत निकलनेपर वरुणने कहा—'अब तो बालकके स्थायी दाँत भी निकल आये; अब तो यज्ञ करो।' इसपर हरिश्चन्द्रने कहा—'यह क्षत्रियकुलोत्पन्न बालक है। क्षत्रिय जबतक कवच धारण नहीं करता, तबतक किसी यज्ञिय कार्यके लिये उपयुक्त नहीं होता। बस, इसे कवच-शास्त्र धारण करने योग्य हो जाने दीजिये, फिर आपके आदेशानुसार यज्ञ करूँगा।' वरुणने उत्तर दिया—'बहुत ठीक।' इस प्रकार रोहित सोलह-सत्तरह वर्षोंका हो गया और शस्त्र-कवच भी धारण करने लगा। तब वरुणने फिर टोका। हरिश्चन्द्रने कहा—'अच्छी बात है। आप कल पधारें। सब यज्ञिय व्यवस्था हो जायगी' (ऐतरेय० ७। ३३। १४)।

हरिश्चन्द्रने रोहितको बुलाकर कहा—'तुम वरुणदेवकी कृपासे मुझे प्राप्त हुए हो, इसलिये मैं तुम्हारे द्वारा उनका यजन करूँगा।' किंतु रोहितने यह बात स्वीकार नहीं की और अपना धनुष-बाण लेकर वनमें चला गया। अब वरुणदेवकी शक्तियोंने हरिश्चन्द्रको पकड़ा और वे जलोदररोगसे ग्रस्त हो गये। पिताकी व्याधिका समाचार जब रोहितने अरण्यमें सुना, तब वह नगरकी ओर चल पड़ा। परंतु बीच मार्गमें ही इन्द्र पुरुषका वेष धारण कर उसके समक्ष प्रकट हुए और प्रतिवर्ष उसे एक-एक श्लोकद्वारा उपदेश देते रहे। यह उपदेश पाँच वर्षोंमें पूरा हुआ और तबतक रोहित अरण्यमें ही निवास करते हुए उनके उपदेशका लाभ उठाता रहा। इन्द्रके पाँच श्लोकोंका वह उपदेश-गीत इस प्रकार है—

नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम।
पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा चरैवेति॥

'रोहित! हमने विद्वानोंसे सुना है कि श्रमसे थककर चूर हुए बिना किसीको धन-सम्पदा प्राप्त नहीं होती। बैठे-ठाले पुरुषको पाप धर दबाता है। इन्द्र उसीका मित्र है, जो बराबर चलता रहता है—थककर, निराश होकर बैठ नहीं जाता। इसलिये चलते रहो।'

पुष्पिण्यौ चरतो जङ्घे भूष्णुरात्मा फलग्रहिः।
शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताश्चरैवेति॥

'जो व्यक्ति चलता रहता है, उसकी पिण्डलियाँ (जाँघें) फूल देती हैं (अन्योंद्वारा सेवा होती है)। उसकी आत्मा वृद्धिंगत होकर आरोग्यादि फलकी भागी होती है तथा धर्मार्थ प्रभासादि तीर्थोंमें सतत चलनेवालेके अपराध और पाप थककर सो जाते हैं। अतः चलते ही रहो।'

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चराति चरतो भगश्चरैवेति॥

'बैठनेवालेकी किस्मत बैठ जाती है, उठनेवालेकी उठती, सोनेवालेकी सो जाती और चलनेवालेका भाग्य प्रतिदिन उत्तरोत्तर चमकने लगता है। अतः चलते ही रहो।'

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरंश्चरैवेति॥*

'सोनेवाला पुरुष मानो कलियुगमें रहता है, अँगड़ाई लेनेवाला व्यक्ति द्वापरमें पहुँच जाता है और उठकर खड़ा हुआ व्यक्ति त्रेतामें आ जाता है तथा आशा और उत्साहसे भरपूर होकर अपने निश्चित मार्गपर चलनेवालेके सामने

* यह मन्त्र स्वल्पान्तरसे मनुस्मृति (९। ३०२)-में भी प्राप्त होता है।

सतयुग उपस्थित हो जाता है। अतः चलते ही रहो।'

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरंश्चैरवेति॥

(ऐत० ब्रा० ७। ३३)

'उठकर कमर कसकर चल पड़नेवाले पुरुषको ही मधु मिलता है। निरन्तर चलता हुआ ही स्वादिष्ट फलोंका आनन्द प्राप्त करता है; सूर्यदेवको देखो जो सतत चलते रहते हैं, क्षणभर भी आलस्य नहीं करते। इसलिये जीवनमें भौतिक और आध्यात्मिक मार्गके पथिकको चाहिये कि बाधाओंसे संघर्ष करता हुआ चलता ही रहे, आगे बढ़ता ही रहे।

—इस सुन्दर उपदेशमें रोहितको इन्द्रने बराबर चलते रहनेकी शिक्षा दी है, जो उन्हें किसी ब्रह्मवेत्तासे प्राप्त हुई थी। गीताका मूल उद्देश्य आत्माका उद्‌बोधन है, जिसमें बताया गया है कि क्या अभ्युदय और क्या निःश्रेयस—दोनोंकी उन्नतिके पथिकको बिना थके आगे बढ़ते रहना चाहिये; क्योंकि चलते रहनेका ही नाम जीवन है। ठहरा हुआ जल, रुका हुआ वायु गंदा हो जाता है। बहते हुए झरनेके जलमें ताजगी और जिंदगी रहती है, प्रवाहशील पवनमें प्राणोंका भण्डार रहता है। कोटि-कोटि वर्षोंसे अनन्त आकाशमें निरन्तर चलते हुए सूर्यदेवपर दृष्टि डालिये, वह असंख्य लोक-लोकान्तरोंका भ्रमण करता हुआ हमारे द्वारपर आकर हमें निरन्तर उपदेश दे रहा है। वेदभगवान् कहते हैं। '**स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव**' (ऋक्० ५। ५१। १५) अर्थात् कल्याण-मार्गपर चलते रहो, चलते रहो—जैसे सूर्य और चन्द्र सदा चलते रहते हैं। ऐतरेय भी कह रहा है—'**चरैवेति, चरैवेति।**' आत्मा उनका ही वरण करती है, जो अपने मार्गमें आगे कदम उठाते बढ़ते जाते हैं। भगवान् उनका कल्याण निश्चितरूपसे स्वयं करते हैं।

अन्तमें रोहितको वनमें ही अजीगर्त मुनि अपने तीन पुत्रोंके साथ भूखसे संतप्त दृष्टिगोचर हुए। रोहितने उन्हें सौ गायें देकर उनके एक पुत्र शुनःशेपको यज्ञके लिये मोल ले लिया। हरिश्चन्द्रका यज्ञ आरम्भ हुआ। उनके यज्ञमें विश्वामित्र होता, जमदग्नि अध्वर्यु, वसिष्ठ ब्रह्मा और अयास्य उद्‌गाता बने। शुनःशेपने विश्वामित्रके निर्देशसे '**कस्य नूनम् अभित्वादेव**' इत्यादि मन्त्रसे प्रजापति, अग्नि, सविता और वरुण आदि देवोंकी स्तुति—प्रार्थना की। इससे वह समस्त बन्धनोंसे मुक्त हो गया। वरुणदेवने भी संतुष्ट होकर राजा हरिश्चन्द्रको रोगसे मुक्ति प्रदान की। इस प्रकार इन्द्रके उपदेशसे देवोंकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना तथा यज्ञकी सफलतासे रोहितका जीवन भी सफल एवं आनन्दसे परिपूर्ण हो गया। ऐतरेयब्राह्मणके इस उपाख्यानका निष्कर्ष यह है कि सदाचारके मार्गपर चलते रहना चाहिये। '**चरैवेति-चरैवेति**' सदाचारका शाश्वत संदेश है।'